**SEMESTER - 3**

# CC- 11

# South Asia 1950 Onwards

- **इंडियन डायस्पोरा , पार्ट-5**


Vetted by :

**प्रो० (डॉ०) सुरेंद्रकुमार**

विभागाध्यक्ष, इतिहासविभाग

पटनाविश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

**शिप्रानंदन**

अतिथिशिक्षक, इतिहासविभाग

पटनाविश्वविद्यालय, पटना

संपर्क :08604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

# भारतीय प्रवासी समुदाय के प्रति विदेश नीति

**भारतीय प्रवासियों एवं अन्य देशों को सांस्कृतिक स्तर पर जोड़ने में भारतीय फिल्म एवं संगीत का योगदान**

सिनेमा एक ऐसा माध्यम है जिसका प्रभावक्षेत्र दोतरफा है। यह एक तरफ देश की भाषा, संस्कृति एव समाज को प्रभावित करता है वही स्वयं भी इससे प्रभावित होता है। दुनिया में सबसे तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था वाले भारत और संपूर्ण विश्व के विभिन्नदेशों में जा बसे भारतीयों और वहाँ के विकास में उनके प्रभावकारी योगदान के चलते भारतीय सिनेमा अब दुनिया के मनोरंजन बाजार का एक प्रमुख एवं बड़ा खिलाड़ी बन चुका है।

भारतीय सिनेमा न केवल भारत और एशिया बल्कि विश्व सिनेमा में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफलता हासिल की है। यही नहीं भारतीय सिनेमा आज यूरोप एवं अमरीका के ही नहीं दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड तक के देशों में अपनी पैठ बन चुका है। इन देशों के प्रमुख शहरों में भारतीय फिल्में न केवल देखी एवं सराही जाती है। बल्कि देखने वालों में भारतीय मूल के ही नहीं बल्कि उन देशों के दर्शक भी हैं जो न केवल भारतीय फिल्मों को देखते एवं समझते हैं बल्कि उसका आनंद भी उठाते हैं। डबिंग व्यवस्था होने के कारण वह भारतीय फिल्म को वे अपनी भाषा में देख सकते है।

आज भारत एक ऐसा देश बन चुका हैं जहां दुनिया में सबसे ज्यादा फिल्मों का निर्माण होता है। हिन्दी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में बनने वाली फिल्में के दर्शकों की दुनिया में सबसे ज्यादा तादाद है। इस समय फिल्में देखने वालों की संख्या रोजाना करीब डेढ़ करोड़ आंकी गयी है।

दर्शकों के विचारों के स्तर पर सिनेमा संदेश देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विकासशील देश के आम लोगों की उपलब्धियों को आगे लाने में महत्वपूर्ण भूमिका वाले फिल्मों की सूची लंबी आई है। ऐश्वर्या राय द्वारा अभीनित Provoked फिल्म में प्रवासी भारतीय के उत्पीड़न की दासता कोस्पष्ट करती है।

दुनिया के विभिन्न विकसित देश भारतीय बाजारों में अपनी पैठ जमाने और भारतीयों को अपने देशों की ओर आकर्षित करने के लिए भारतीय फिल्म निर्माताओं को विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ और अवसर उपलब्ध करा रहे हैं। उन देशों की आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक पहलुओं से भी प्रेरणा ले रहे हैं ताकि जो फिल्में बने वह दोनों देशों के दर्शकों पर समान प्रभाव डाल सकें। आज विदेशी फिल्म निर्माता एवं निर्देशक भारत और भारतीय पृष्ठभूमि के विषयों पर फिल्में बना रहे हैं। इस विषय पर भारतीय और विदेशी सरकार मिलकर काम कर रहे हैं।

भारतीय संस्कृति के महत्व को प्रतिपाद्रित करने वाली मनोज कुमार की पुरब और पश्चिम में सामाजिक पहलुओं को दिखाया गया। फायर जैसे समलैंगिकतापर आधारित फिल्म के जरिये दीपा मेहता ने देश और दुनिया में सिनेमा प्रेमियों को काफी उद्देलित किया।

भारत एवं जापान के सहयोग से युगो साको के निर्देशन में 1994 ई. में निर्मात धारावाहिक रामायण ने एशियाई लोगों को काफी प्रभावित किया। मीना फिल्म के अधीन 14 खंडो वाले एक धारावाहिक का निर्माण यूनीसेफ के लिए किया गया था। इस धारावाहिक में दक्षिण एशियाई देशों में बालिकाओं से सम्बन्धित मुद्दों को उठाया गया था। यह धारावाहिक बांग्लादेश में काफी लोकप्रिय हुआ था इस मार्गदर्शी प्रयासों ने भारतीय एनीमेशन को विदेशों तक पहुँचा दिया।

भारतीय फिल्में अपने संगीत, नृत्य और गानों के कारण विश्व के अनेक देशों में अत्यंत लोकप्रिय हैं। भारत के पड़ोसी देशों नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका एवं पाकिस्तान में भी भारतीय फिल्मों की जबरदस्त मांगा है।

अफगानिस्तान एवं चीन में भी भारतीय फिल्में पसंद की जाती हैं। चीन में डॉ. कोटनीस की अमर कहानी और राजकुमार की आवारा आज भी उत्साह से देखी जाती है। ब्रिटेन, आयरलैण्ड, रूस, फ्रांस, जर्मनी, नार्वे, स्वीडन और फिनलैण्ड में भारतीय फिल्में काफी लोकप्रिय हैं। कनाड़ा, अमेरिका एवं इग्लैण्ड की कुछ सिनेमाघरों में भारतीय फिल्मों के नियमितशो होते हैं। मॉरीशस मेंभोजपुरी फिल्म एवं अनेक कलाकार को काफी महत्व दिया जाता है। वहाँ पर गये भारतीये प्रवासियों के घरों में सी डी. एवं वी सी डी देखे जा सकते हैं जो भारतीय फिल्मों के होते हैं।

भारत और विश्व के बीच आदान प्रदान के सामाजिक सांस्कृतिक पहलू ज्यादा महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इस तरह पश्चिमी और भारतीय सांस्कृति और समाज दोनों एक दूसरे को बेहतर ढंग से समझने एवं प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

साथ ही भारतीय प्रवासी समुदाय संगीत एवं फिल्मों के माध्यम से अपने देश से जुड़कर अपनी संस्कृति को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

## निष्कर्षतः

इस प्रकार हम देखते है कि भारतीय लोग प्राचीनकाल से ही विभिन्न देशों में अलग-अलग उद्देश्यों से गये। प्रचीनकाल में मुख्य रूप से व्यापार एवं धर्म प्रचार के लिए दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों में गये। मध्यकाल में भी लोग व्यापार, सैनिक के रूप में, युद्ध में विजित दास के रूप में, साम्राज्य विस्तार की लालसा के फलस्वरूप लोग एक देश से दूसरे देशों को जाया

करते थे। औपनिवेशिक काल में व्यापारी, श्रमिक पश्चिम एशिया, अफ्रीका, मारीशस, वेस्टइंडीज, मलेशिया,फिजी, रियूनियन, ग्वाडेलोप, मार्टिनिक, डच गुआना, ब्रिटिश गुआना, जमैका और त्रिनिदाद इत्यादि उपनिवेशों में गये जो मुख्य रूप से बम्बई प्रेसीडेंसी, मद्रास प्रेसीडेंसी एवं उत्तर भारत के थे। यह कहा जा सकता है कि भारतीयों का प्रवास जो औपनिवेशिक काल में हुआ, उसके पीछे ब्रिटिश शासन की एक कूटनीति दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने अपने उपनिवेशों को आर्थिक रूप से श्रेष्ठ बनाने के लिए ऐसा किया।

प्रारम्भ में भारतीय मजदूरों ने काफी संघर्ष किया। उन्हें किसी प्रकार की सुविधा नहीं दी गई। यद्यपि वह अपने कार्यों को काफी परिश्रम के साथ करते थे, साथ ही उनसे करारनामा भी करवाया जाता था। उनकी संस्कृति व सभ्यता की आलोचना की जाती थी। किन्तु इन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने हिम्मत न हारी | वर्तमान समय में ये भारतीय प्रवासी कहीं अपना स्थिति सुदृढ़ कर चुके हैं, तथा कहीं-कहीं संघर्षरत हैं।

स्वतंत्रता के बाद विकसित देशों यू. एस., यू. के,कनाडा, पश्चिमीएशियाई देशों, खाडी देशों, ऑस्ट्रेलिया में लोग गये। हम देखते है कि जो भी भारतीय लोग विभिन्न देशों को गये हैं वे किसी न किसी माध्यम से भारत से जुड़े हुए हैं चाहे वे भारत मंत्रालय द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम हो, गीत-संगीत, फिल्म या कला या फिर भारतीयों द्वारा स्थापित किए मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा। भारतीय संस्कृति को हर स्तर पर उनमें वेशभूषा, डांस, त्योहार, खान-पान, भाषा इत्यादि में देखा जा सकता है।